



March, 2012



निर्मल वर्मा के साहित्य में सामाजिक मूल्य

* गुरचरण सिंह

* कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

भारतीय समाज में समष्टिगत मूल्यों की परम्परा अति प्राचीन मानी गई है दया, त्याग, समानता, राष्ट्र-प्रेम, मानवता आदि को समष्टिगत मूल्यों की श्रेणी में अंकित किया जा रहा है। भारतीय समाज में व्यक्ति का स्थान नगण्य व समाज सर्वोपरि है।

समाज शब्द समष्टि की भान्ति व्यापक है। यह विभिन्न अर्थों का संवाहक है, जिनको दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है "प्रथम जन प्रचलित अर्थ एवं द्वितीय, वैज्ञानिक अर्थ। सामान्यतः जनता में 'समाज' शब्द से अभिप्राय कुछ व्यक्तियों का समूह समझा जाता है। यथा – आर्य समाज अर्थात् आर्यों का समूह, नगर-समाज अर्थात् नगरों का समूह, वानर समाज-वानरों का समूह आदि।"

समाज केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं है। बल्कि जहाँ भी जीवन है, वहाँ समाज पाया जाता है। मैकाइवर तथा पेज ने लिखा है – "जहाँ जीवन है, वहाँ समाज है जहाँ जीवन होता है, वहाँ वंशानुसंक्रमण है। वंशानुक्रम केवल वहाँ ही हो सकता है जहाँ सम्बन्धों में एक-दूसरे भी हों। यदि दूसरे हैं तो अन्तःक्रिया होगी और अन्तःक्रिया हुई तो समाज होगा ही।"

निर्मल वर्मा जी ने अपने साहित्य में सामाजिक मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं का चित्रांकन बड़े ही महत्वपूर्ण ढंग से किया है जहाँ तक संवेदना का सम्बन्ध है, निर्मल वर्मा जी ने समसामयिक मानव का, जो आज परिवेश और व्यक्तित्व में सम्बन्धों की स्थापना हेतु व्याकुल है और अपने अन्तर्मन में नैतिक मूल्यों, वासनाओं और नई जीवन पद्धतियों अथवा विचारों के संघर्ष में रत हैं का चित्रण बड़ी कुशलता से किया है।

वर्तमान समाज में दिन-प्रतिदिन बदलती हुई मान्यताओं के बीच व्यक्ति की स्वतंत्रता के कारण उन पर लगे सामाजिक प्रतिबन्धों एवं पारिवारिक वर्जनाओं के कारण मन में उठे उल्लास का ज्वार टंडा पड़ जाता है इच्छाओं की पूर्ति न होना, आर्थिक एवं सामाजिक दबाव मानव को तनाव के साथ जीने लिए विवश कर देता है "रात का रिपोर्टर" उपन्यास में उपन्यास के नायक रिशी की इसी दशा का चित्रांकन हुआ है स्वयं रिशी के शब्दों में "वह लायब्रेरी की तरफ चलने लगा। कोई उसका पीछा नहीं कर रहा था, जो वह सज्जन उसके पास खड़े हो गए थे।

37 साल की उम्र में उसने तरह-तरह के डर भोगे थे, लेकिन ये बिल्कुल नए किस्म का डर था, जिसका मतलब किसी भी शब्दकोष में नहीं था।" आधुनिक समाज में नारी और पुरुष के मध्य सदाचार, पतिव्रत्य, एक पत्नीत्व आदि की परम्परागत नैतिक मान्यताएं अस्तित्व ही नहीं होता जा रही हैं

। विवाह की अनिवार्यता भी प्रश्नचिन्ह बनती जा रही हैं। ऐसी मर्यादाहीन स्थिति ने, समाज में मुक्त यौन सम्बन्धों को बढ़ावा दिया है। निर्मल जी ने अपने साहित्य में मुक्त यौन-सम्बन्धों का जोरदार वर्णन किया है। 'बीच बहस में' कहानी-संग्रह की 'वीकएण्ड' कहानी में इन सम्बन्धों का चित्रण है।

'वीकएण्ड' एक लड़की की कहानी है, जो अकेली रहती है और एक ऐसे पुरुष को प्यार करती है, जो विवाहिता और एक बच्ची का बाप भी है। वह लड़की उस पुरुष से स्वच्छन्द यौन-सम्बन्ध करती है जिसका वर्णन वह स्वयं करती है। "मैं धीरे से फुसफुसाती.... और वह मुझे खींच लेता हम दोनों एक दूसरे को पकड़ लेते। हम छूने लगते। एक दूसरे की खाली जगहों का जहाँ भूत सेरा करने थे। वे मेरे होठों, मेरे कटकटाते दाँतों की नीचे काँपने लगता। मुझे लगता जैसे, मेरे होंठ पहली बार उसके अंगों की यात्रा कर रहे हो।"

'एक चिथड़ा सुख' उपन्यास में नायिका बिट्टी अपने मन में हजारों सपने संजोये इलाहाबाद छोड़कर शहर आती है परन्तु वहाँ आकर भी उसे कोई सफलता हाथ नहीं लगती जिसका कारण निराश रहने लगती है। बिट्टी के शब्दों में, "हिन्दुस्तान में कोई कुछ नहीं छोड़ता मैंने कुछ नहीं छोड़ा, लेकिन जब इलाहाबाद छोड़ा था, तो सोचा था कि अब मैं छोटी-छोटी चीजों के घेरे से बाहर आ जाऊँगी, लेकिन मैं उतनी ही छोटी हूँ, जितनी पहले थी, मेरे भीतर कुछ भी नहीं बदला।" जब व्यक्ति आक्रोश और असंतोष का घूंट पीकर थक जाता है तो चुपके से अपने जीवन से सदैव के लिए मुँह मोड़ लेता है। "कव्हे और काला पानी" में भूतपूर्व फौजी कर्नल निहाल चन्द्र अकेला है उसके, जीवन में ऊब उत्काहट और अकेलापन है, पत्नी मर चुकी है। लड़का विदेश चला गया है, इस प्रकार वह परिस्थितियों से सामंजस्य नहीं बैठा सका और आत्महत्या का कारण बनता है।

"निहाल चंद्र के गले में रस्सी फंसी थी और रस्सी का सिरा पेड़ की टहनियों से बंधा था। टहनियाँ हिल रही थी और निहाल चंद्र लटक रहे थे। नीचे घास पर उनका थैला, उनकी धर्मस, उनकी आर्मी का कोट पड़ा था।" निर्धनता अनेक समस्याओं की जननी है आज भारत में गरीबी की समस्या ओर जोर पकड़ रही है लाखों लोग ऐसे हैं जिन्हें एक वक्त का भोजन भी नहीं मिलता निर्धनता बहुत बड़ा अभिशाप है। इसी के संदर्भ में वर्मा जी ने "लालटीन की छत" में निर्धनता को अति सूक्ष्मता से दर्शाया है "मंगतू उठा, एक-एक करके अपनी अंगुलियाँ चटकाई। फिर

वह धीरे-धीरे टांगों की पट्टियों को उतारने लगा, जिन्हें वह जुराबों की जगह लपेटता था। मैंले चिथड़े जो उसने काया, लामा और छोटे के पुराने कपड़ों—ब्योंत कर बनाए थे।” बेकारी किसी देश की समस्या न होकर विश्व की समस्या बन गई है बेकारी की समस्या, आज एक जटिल रूप धारण कर चुकी है।

आधुनिक युग में आए क्रान्तिकारी परिवर्तन औद्योगिकरण एवं मशीनीकरण के कारण बेकारी की समस्या बढ़ती जा रही है नागरीकरण, दोषपूर्ण उद्योगों की स्थापना, शिक्षा का अनयोजित विकास ग्रामों का पतन आदि बेरोजगारी के प्रमुख उत्तरदायी कारण हैं इसी का वर्णन निर्मल जी ने “जलती झाड़ी” कहानी संग्रह की “लंदन की एक रात” में कथावाचक स्वयं कहता है “मैं दूसरी बार वहाँ गया था।

पहली रात देर से पहुँचा था। जाने से पहले ही सारा काम बंट चुका था मैं फिर भी अनिश्चित था गेट के बहार खड़ा था। सोच रहा था, शायद आखिरी क्षण उन्हें किसी आदमी की जरूरत पड़ेगी और वे मुझे बुलायेंगे।” परिन्दे कहानी के अन्तर्गत नायक के रूप में एक बेरोजगार युवक का चित्रांकन किया है “मैं अब भी बेकार हूँ लेकिन अब अम्लयामेंट एक्सचेंज दतर जाने की आदत सी छूट गयी है।

मैं अक्सर अपने कमरे में बंद रहता हूँ”

आज टूटते हुए संबंधों के कारण व्यक्ति अपने आप में निरन्तर सिमटता जा रहा है, अन्तर्मुखी होता जाता है परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने आप में बिल्कुल एकेला हो जाता है “माया दर्पण” कहानी में तरन घर और बाबू जी से छुटकारा पाना चाहती है उसे लगता है “वह अकेली रहेगी, किन्तु बाबू की छाया से बंधी और बाबू जी का अकेलापन हमेशा उससे जुड़ा रहेगा।”

सामाजिक मूल्यों से अभिप्राय किसी भी व्यक्ति परिवार अथवा समाज के भिन्न-भिन्न जीवन व्यापारों में या सामाजिक संबंधों में मानवता की दृष्टि से प्रेरणा करने वाले आदर्शों की समष्टि में है। निर्मल जी के साहित्य में व्यक्तिवादी पारिवारिक, समष्टिवादी मूल्यों की अभिव्यक्ति मिलती है निर्मल जी की आस्था वैयक्तिक हित में न होकर समाज हित में निहित है। मानवता दया, त्याग आदि अभिवृत्तियों की क्रियाशीलता से ही समाज व देश की उन्नति की और अग्रसर होती है। अतः निर्मल जी सामाजिक मंगलेच्छा को एक सर्वोच्च सामाजिक मूल्य के रूप में प्रतिपादित करते हैं। वह उन रुढ़ियों और परम्पराओं को त्याग देने का संदेश देते हैं। जो मनुष्य के जीवन को शुष्क और नीरस बना देते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

‘1 डॉ. विमल शंकर नागर, आँचलिक उपन्यास सामाजिक और सांस्कृतिक, पृ. 1 2राम बिहारी सिंह तोमर, समाज शास्त्र के सिद्धांत, पृ. 101, 102 3 निर्मल वर्मा, रात का रिपोर्टर (उपन्यास), पृ. 94 4 निर्मल वर्मा, बीच बहस में (कहानी-संग्रह), पृ. 38 5 निर्मल वर्मा, एक चिथड़ा सुख (उपन्यास), पृ. 114 6 निर्मल वर्मा, कब्बे और काला पानी (कहानी संग्रह), पृ. 80 7 निर्मल वर्मा, लालटीन की छत (उपन्यास), पृ. 79 8 निर्मल वर्मा, जलती-झाड़ी (कहानी संग्रह), पृ. 105 9 निर्मल वर्मा, परिन्दे (कहानी संग्रह), पृ. 106 10 निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी (कहानी संग्रह), पृ. 36